



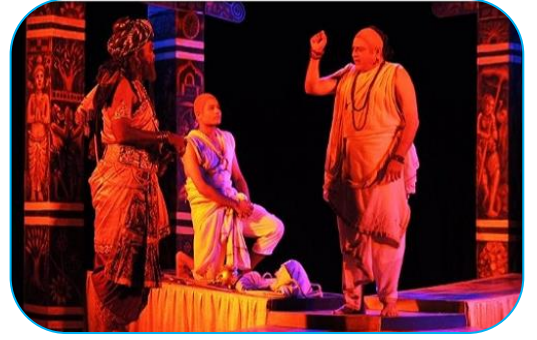
मुद्राराक्षस नाटक में नायक के रूप में राक्षस कितना स्वीकार्य है

वीथिका-दास-वैराग्य¹, डॉ. रेनू शुक्ला²
शोधार्थी¹,

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत एवं प्राच्य भाषा विभाग,
डॉ. सी वी रमन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, विलासपुर (छ. ग.)

भूमिका-

विशाखदत्त का मुद्राराक्षसम्, नाटक संस्कृतसाहित्य का एक असाधारण नाटक है। साहित्यदर्पणक विश्वनाथ ने अपनी पुस्तक साहित्यदर्पण के छठे अध्याय में काहा है कि नाटक का विषय इतिहास या पौराणिक कथा या कौइ लोक कथा होगी। काव्यशास्त्र की इस विशेषण के अनुसार यह नाटक ऐतिहासिक कथा के आधार पर लिखा गया है, परंतु ऐतिहासिक कथा को राजनीतिक संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर एक असाधारण नाटक में बदल दिया गया है। साहित्यदर्पणकर विश्वनाथने नाटक का रस बताते हुए कहा।



एक एव भवदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अन्यमन्ये रसाः सर्वे कार्यं निर्वहणेऽदभूतम्।¹

अर्थात् शृंग के वीर और शांत रस के बीच का कोई एक रस नाटक का मुख्य रस होगा और अन्य रस या गौण रस विभिन्न घटनाओं की गति में सहायक होगा संस्कृत साहित्य में अधिकांश नाटक निखे जाते हैं शृंग रस पर, लेकिन विशाखदत्त द्वारा लिखित यह नाटक वीर रस पर आधारित है। नाट्यशास्त्रक भरतमुनि अपने नाट्यशास्त्र अध्याय षष्ठ में वीरस्य के लक्षणों का वर्णन करते हुए कहते हैं-

उत्साहाध्यवसायादविषयादविषदित्वादविस्मयमोहात्।
विविधादर्थविशेषाद्वीररसो नाम सम्भवति॥²

दूसरे शब्दों में कहें ती उत्साह, दृढता, उदासी, आश्चर्य ओत मोहभगं इन सभी भावनाओं का वर्णन इस नाटक में अलग अलग पात्रों के माध्यम से किया गया है। नाटक में चाणक्य और राक्षस के बीच हुए संघर्ष में जीत हासिल करने वाले नामक के रूप में चाणक्य का वर्णन किया गया है। नंद वंश का मंत्री राक्षस, लगभग चाणक्य के बराबर

ही है, लेकिन कुटनीतिक चालों की अदूरदर्शिता के कारण वह पराजित हो गया, और प्रश्न यह उठता है कि क्या राक्षस को इस नाटक का नायक चाणक्य की तुलना में कहा जा सकता है, इस नाटक क्या नायक।

संस्कृत नाटक में नायक के लक्षण-

नाटक में नायक और नायिका ही मुख्य पात्र हैं। नाकाकर ने अपने नाट्यशास्त्र के चौंतीसवे अध्याय में नायक को चार भागों में बाँटा है- धीरोद्धोत्त, धीरललित धीरोदात्त धीरप्रशान्त।

धीरोद्धता धीरललिता धीरोदात्तस्तथैव च।
धीरप्रशान्तकाश्चैव नायकाः परिकीर्तिताः।³

उनके अनुसार देवता धीरोद्धत, राजा धीरललित होते हैं, सेनापति और मंत्री सज्जन होते हैं, और ब्राह्मण और व्यापारी धीरप्रशान्त होते हैं।

दशरूपक धनंजय ने अपनी पुस्तक दशरूपक में नायक को चार भागों में विभाजित किया है।

भेदश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्।
धीरललित, धीरशान्त, धीरोदात्त, धीरौद्धत।

धीरललित नायक के लक्षणों के बारे में वे कहते हैं-

निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।

यानी धीरललित नायक एक शांत, कलासक्त, प्रसन्नचित्त और सौम्य स्वभाव के नायक हैं।
धीरशान्त नायक के लक्षणों के बारे में वे कहते हैं-

सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरोशान्तो द्विजादिकः।

अर्थात् अल्पगुण वाला ब्राह्मण धीरशान्त नायक कटलाता है। आमतौर पर प्रकरणों का नायक ऐसा होता है।
धीरोशान्त नायक के लक्षणों के बारे में वे कहते हैं-

महासत्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकथनः।
स्थिरो निगुताहंकारो धीरोदात्तः दृढव्रतः।

अर्थात् महासत्त्व, अत्यंत गंभीर, स्वभाव वाला, क्षमाशील आत्म प्रचार से विमुख, स्थिर, जिड़्डी, अहंकारी,
दृढनिश्चयी धीरोदात्त नामक होता है।
धीरोद्धत नायक के लक्षणों के बारे में वे कहते हैं-

दर्पमात्सर्तर्पभूयिष्ठ मायाच्छद्मपरायणः।
धीरोद्धतस्त्वहंकारी चलश्चण्डो विकत्थनः॥⁴

जो लोग अत्यधिक महत्वाकांक्षी, लालची भ्रम और अभाव से ग्रस्त, अहंकारी, चंचल मनमौजी और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए प्रवृत्त होते हैं वे धीरोद्धत नायक होती हैं।

भारतीय नाटक या महाकाव्य में नायक की भूमिका के लिए धैर्य या धीमापन नितांत आवश्यक है। इसलिए नायक के विभिन्न भेदों से पहले पहले 'धीर' शब्द उपयुक्त रहा है दशरूपककार नायक को उसी तरह वर्गीकृत नहीं करते जैसे नाट्यशास्त्रकार करते हैं। उन्होंने नायक के चरित्र के आधार पर नायक का वर्गीकरण किया। वह नायक के गुणों का वर्णन करने के सन्दर्भ में कहते हैं-

नेता विनीतोमधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः शुचिवाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा॥
व्युद्ध्यात्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः॥⁵

अर्थात् नेता या नायक विनम्र, मधुर, आत्मत्यागी, कुशल, आच्छा बोलने वाला, लोकप्रिय साफ-सुथरा वाकपटु, अत्यंत सुंदर, स्थिर और युवा होता है। वह बुद्धिमान, उत्साही, आच्छी वाददशत वाला, बुद्धिमान, कलामें कुशल, प्रतिभाशाली विद्वान और धार्मिक होगा।

संस्कृत साहित्य में नाटक में नायक का चरित्र चित्रण-

नाट्यशास्त्र के लेखक भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र ग्रंथ के पंचत्रिंश में आध्याय में नाटक में राक्षस पात्रों की विशेषताओं का वर्णन किया है-

स्थूलं प्रांशुं वृहद्देहं मेघगम्भीरनिस्वनम्।
रोद्रस्वभावनेत्रं च स्वभावभ्रुकुटीमुखम्॥
रक्षोदानवदैत्यानां भूमिकां प्रयोजयेत्।
पुरुषाणां प्रयोगस्तु तथाङ्गक्रिययान्वितः॥⁶

अर्थात् जो लोग मोटे, विशाल शरीर वाले, जिनकी भाव आवाज वादलों की आवाज के समान गंभीर होती हैं, जिनकी आंखें भयंकर होती हैं, स्वभावतः भौहे चढ़ाने वाली होती हैं, वे राक्षस होते हैं। दानव दैत्यों की भूमिका में लगे हुए हैं, क्योंकि नर गोष्ठों का कार्य उनके अंगों के अंगों की गति के अनुरूप होना चाहिए।

लेकिन विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षसम् इसमें नाटक में नाट्यशास्त्रकार द्वारा वर्णित राक्षसचरित्र हमें नहीं दिखता है। वह इस चरित्र को पुरी तरह से अलग तरीके से चित्रित करता है। विशाखदत्त द्वारा रचित नाटक मुद्राराक्षस में राक्षस नंदवंश का अमात्य था, जो चन्द्रगुप्त के मंत्री चाणक्य के समकक्ष था। उनके चरित्र के माध्यम से उभरने वाली कुछ विशेष विशेषताओं पर नीचे चर्चा की गई है-

प्रभुभक्ति अर्थात् मैंने दासत्व स्वीकार कर लिया है, मैं सिद्धान्तों के प्रयोग पर यत्नपूर्वक ध्यान ले रहे हैं हूँ, इसलिए नहीं कि मैं इस प्रभुभक्ति को भुल गई हूँ, यह स अभी भी नंदा की छ तरह ही है, इसलिए नहीं कि भोग की डाग है अभी भी बलवान है, न ही इसलिए कि अब मुझमे

आनन्द की इच्छा नहीं रही, न ही इसलिए कि मैं व से प्रभु की खोज में अपना जीवन बलिदान करने से डारता हूँ, या यह करता हूँ किस में सिद्धान्तों के प्रयोग में चाणक्य को हराकर दुनिया में यशस्वी बन जाऊंगा। वास्तव में, यदि मैं स्वर्ग में भी शत्रु को मार सकुं, तो भगवान प्रसन्न होंगे - प्रभु की सेवा होगी-यही मेरा उद्देश्य है। इस कथन से उनकी प्रभु के प्रतिभक्ति स्पष्ट है वह अपने प्रभु की हालत के लिए लक्ष्मी को दोषी मानता है- भगवति ज्ञानलालये भृशगुणज्ञासि कुतः-

आनन्दहेतुमपि देवमपास्य नन्दं
सक्तासि किं कथाय वैरिणि मौर्यपुत्रे।
दानाम्बुराजिरिख गन्धगजस्य नाशे
तत्रैव किं न चपले प्रलयं गतासि॥⁷

है भगवती कमलया, तुम पुण्य के प्रेम को बिल्कुल भी नहीं जानती हो, तुम ऐसा क्यों कहती हो, सुनो, भए प्रभु जन्ह तुम्हारे सुख का प्रबंध करते थे, फिर भी तुमने उन्हें त्याग दिया और मुरा के गर्भ से जन्मे उनके शत्रुके पुत्र को आश्रय दिया। बता थी तुम ठीक ही क्यों फूर्तिले हो। हां वह मार क्यों नहीं गया। और भी कहा –

पृथिव्यां किं दग्धा प्रतिभकुलजा भूमिपत्यः।
पतिं पापेमौयं यदासि कुलहीनं वृतवती॥
प्रकृत्या वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला।
पुरन्धीणां प्रज्ञां पुरुषगुणविज्ञानविमुखी॥⁸

है पापी, मरणधर्मी पुत्र कोई परिवार नहीं होता, यदि तु उसे पति के रूप में स्वीकार करता है, तो मैं पुच्छता हूँ कि दुनिया के कौन से महान राजा चाणक्य के क्रोध से भस्म हो गए थे, या मैं तुम्हें बिना किसी कारण एक महिला के दिमाग को डांटता हूँ काशफुल की तरह स्वाभाविक रूप में चंचल, वह पुरुष के गुण नहीं देखता चाहती, वह आपका मित्र नहीं है, यह स्त्री जाति का दोष है। राक्षस की इन सभी बातों से उसकी प्रति प्रभु के प्रति भक्ति अधिक होती है।

कुशल योद्धा-

राक्षस एक कुशल योद्धा था यह उसकी बातों से स्पष्ट है। उसने कहा-

निस्त्रिंशोऽयं सजलजलदव्योमसङ्काशमूर्तिः
युद्धश्रद्धापुलकित इव प्राप्तसुखः करेण।
सत्त्वोत्कर्षात् समरनिकषे दृष्टसारः परैर्म
मित्रस्नेहात विवशमधुना साहसे मां नियुके॥⁹

में दोस्ती की चाहत राखता हूँ, मुझे झगड़ों का कोई ज्ञान नहीं है, यह असि अब तू मुझे रोमांच के काम में लगता है, यह असि जिसकी छवि बादल रहित बाकाश की तरह नीती है, यह असि जिसका सार मेरे राहुओं ने समझ लिया है कठोर चट्टान में युद्ध, यह एएस आई, अपनी क्षमताओं की पूर्णता के कारण, मेरे बाहिने हाथ में युद्धमें सम्मान के साथ स्पंदित होता दिख रहा है। चाणक्य की बातों से यह साफ पाता चलता है कि यह एक महान योद्धा थे। उन्होंने राक्षस को संबोधित किया - अमात्यराक्षसे नेतरि किं हस्त्वश्वेन प्रयोजनम्।

राक्षस' की बातों से यह स्पष्ट है कि वह एक महान यो योद्धा है। उन्हेंनो कहा- 'अयि मयि स्थिते कः कुसुमपुरमुपरीत्स्यति। अर्थात् मेरे रहते कुसुमपुर पर कौन आक्रमण करेगा-

प्राकारं परितः शरासनधरैः परिक्रम्यतां
द्वारेषु द्विरदैः प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः स्थीयताम्।
त्यक्त्वा सत्युभयं प्रहर्तुमनसः शत्रोर्वलेदुर्वले
ते नियान्तु मया सहैकमनसो येषामभी यशः॥¹⁰

धनुर्धर लोग नीवार के बाहर तेजी से घुमें, जो हाथी शत्रु के हाथियों को तोड़ सकते हैं वे द्वार के बाहर जाकर खड़े हो जायें। यहि इससे शत्रु की सेना क्षीण हो जाय तो में बाहर निकल कर आक्रमण कर दूंगा, जो लोग सफलता चाहते हैं, मृत्यु के भय से मुक्त होकर शत्रु पर आक्रमण करना चाहते हैं, वे मेरे साथ चलने के लिए तैयार रहें। उसकी युद्ध रणनीति से पता चलता है कि वह एक कुशल योद्धा है।

परगुण की प्रशंसा -

राक्षस को परगुण की प्रशंसा करने में कोई आपत्ति नहीं थी। उसने अपने शुद्ध कौटिल्य के गुणों की प्रशंसा की

आकारः सर्वशास्त्राणां रत्नानानिव सागरः।
गुणेन परितुष्यामो यस्य मत्सरिर्ण वयम्।

अर्थात् समुद्र सभी रत्नों का आकर है, इसलिए यह सभी शास्त्रों का आकर है। हिंसा के कारण हम संतुष्ट नहीं हैं। राक्षस चाणक्य नीति को उनकी जीत पर मुक्त कंठ से बधाई भी ली।

परिहृतमयशः पातितमस्मासु च घातितोऽर्धराज्यहरः।
एकमपि नीतिवीजं बहुफलतामेति यस्य तब॥¹¹

मूर्ति में तत्व का बीज है और उसका फल क्या है जब आधे राज्य का दावदार हटा दिया गया तो उसने तुम्हें अपने ऊपर रात छूने की इजाजत दे दी और उसने मेरे ऊपर राख दवा दी। इन सभी कथनों से यह स्पष्ट है कि चाणक्य के गुणों की प्रशंसा से भरा हुआ था और आपनी असफलताओं को भी स्वीकार करता था।

शास्त्रों का ज्ञान –

यहापि राक्षस कुटनैतिक चालों से पराजित हो गया था, परंतु वह विभिन्न शास्त्रज्ञानों में निपुण था। उन्होंने क्षपणक की यात्रा के लिए एक शुभ दिन तय करने का आदेश दिया। दिन निश्चित किया और उसे बता दिया-

अस्ताभिमुखे सूर्य उदिते सम्म सम्पूर्णमण्डले चन्द्रे
गमनं वधस्य लग्ने उदितास्तमिते च केतौ।¹²

अर्थात् जब केतु उदय और अस्त होगा, सूर्य अस्त की ओर बढ़ेगा और चंद्रमा पूर्ण रूप से उदय होगा, उस समय बध के स्वामित्व वाली मिथुन लग्न में भ्रमण करेगी। यह शुक राक्षस न क्षपणक से अपनी यात्रा के लिए दूसरा दिन निश्चित करने को कहा। कभी-कभी उसे उस दिन जाने के लिए भी कर मनाती है लेकिन राक्षस कहता है कि कोई और शुभ दिन तय कर लो। उन्होंने कुछ फैसलों का तर्क सहित खण्डन किया। उनकी इन सभी बातों से यह स्पष्ट है कि वे ज्योतिषशास्त्र में पारंगत थे।

जब राक्षस की सेना पञ्चमाङ्के में चन्द्रगुप्त की सेना से घिर गई तो राक्षस ने अपने सैनिकों को न्याय दर्शन के विभिन्न तरीकों के माध्यम से सफलता प्राप्त करने का तरीका समझाया। उन तर्कों से पता चलता है कि वे न्यायदर्शन के अच्छे जानकार थे। वह काय और अन्य शास्त्रों में भी पारंगत थे।

परमात्मा या अदृश्य में विश्वास:-

राक्षस ने अपने बार बार की असफलताओं के लिए दैवीय या नियति की जिम्मेदार ठहराया, दूसरे अंक में उसने वैरोचक और बर्वरक की आकस्मिक मृत्यु को भाग्य के खेल के लिए जिम्मेदार ठहराया - 'हतौ वरोचक-बर्वरकौ दैवेन'। वह शयनकक्ष के प्रभारी याद प्रमोदक की मृत्यु की ईश्वर की अवश्य करतूत मानता है। अत्रापि दैवेनोपहता वयम्। इसके लावा, जब उसे मलयकेतु द्वारा पंमके पत्र ओग्याना बाँक्स के बारे में दोषी ठहराया जाता हैं, तो वह अपने भाग्य को नियति का बल खेल मानता है और इस प्रकार वह देवता या भाग्य पर भरोसा करता है।

कोमलता और कठोरता -

राक्षसी चरित्र के विशेषता एक ही समय में कोमलता और कठोरता है। राक्षस के चरित्र में उत्पीडन की विभिन्न तरीकों से संद्रगुप्त को मारने की कोशिश करके दिखाया गया है जैसे जहर वाली लइकियों का उपयोग करना, यन्त्रतोरण का निर्माण करना र हत्यारों को काम पर रखना आदि। दूसरी ओर, सिद्धार्थक की उसके प्रति अवमानना के बावजूद, राक्षस को उसके हृदय की कम कमजोरी और उसके प्रति भावुकता के कारण कई मामलों में वीरता विहीन व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

राक्षस चरित्रों के माध्यम से भावुकता का परिचय दिया जाता है। जैसे वह आसानी से आंसू बहाता है, वैसे ही वह थोड़े से क्षण में परित्यक्त बगीचे की जीर्ण-शीर्ण स्थिति उसे बहुत

आवेगप्रवण-

पीड़ा देती है, औय अउसकी आवाज सेड्स बगीचे में करुदासा का कामात्मक वर्णन निकला-

विपर्यस्तं सौथं कुलमिव महारम्भरचनं
सरः शुष्कं साधोर्हृदयमिव नाशेन सुहृदाम्।
फलैर्हीना वृक्षा विगुणविधियोगादिव नया-
स्तृनैच्छना भूमिर्मतिरिव कुनीतैरविदुषः॥¹³

दूसरे शब्दों में अत्यधिक सावधानी से बनाया गया घर बड़े परिश्रम से स्थापित कुल की तरह दह जाता है। तालाम मन की भाँति सुख गया है। अयोग्य राजा के सामने घर उसूलों की नाई बंजर हो जाता है, और दुष्ट कामों में लगे मुख का मन भी घास से भर जाता है।

इसके अलावा, पूर्वी मृत पुर्वस्मृति नंदराजा के शासनकाल के दौरान, इस परित्यक्त उद्यान की समृद्धि ने राक्षस नंदानुरक्त के दिल की मंत्रमुग्ध कर दिया।

महानता-

हालांकि मलयकेतु ने बार बार राक्षस का अपमान किया, लेकिन चन्द्रगुप्त के आश्रम में आपने लंबे समय तक रहने के लिए कृतज्ञता प्रतीक के रूप में चंद्रगुप्त के मन्त्रालय स्वीकारकर लिया मलयकेतु ने बार-बार राक्षस का अपमान किया, लेकिन चंद्रगुप्त के आश्रम में अपनी लंबे समय तक रहने के लिए कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में चन्द्रगुप्त के मन्त्रालय की स्वीकार कर लिया, उन्होंने सबसे पहले मलयकेतु को की रिहाई के लिए प्रार्थना की- 'राजन् चन्द्रगुप्त! विदितमेव ये यथा वयम् मलयकेतौ किञ्चित् कालमुषितास्तत् परिरक्षन्त्यन्तामस्य प्राणाः- राक्षस की इस बात से उनकी महानता का पता चलता है।

दयालु मित्रता-

यह सुनकर कि चाणक्य ने चंदनदास को उसके परिवार सहित कारागार में डाल दिया, राक्षस को ऐसा लगा मानो उसे परिवार सहित कारागार में डाल दिया गया हो। तो उन्होंने कहा- नतु वक्तव्यं संमितः सपुत्रकलत्रो राक्षसः। यह समाचार सुनकर एकचित्त चन्दनदास वध्यस्थल की ओर दौड़ पड़े, मित्र की रिहाई ने स्वयं को शत्रु के हवाले कर दिया। उसने कहा-

नायं त्रिंशकालः प्रथममिह कृते घातकानां विघाते नीतिः कालान्तरेण प्रकटयति फलं किं तथा कार्यमात्रा
औदासीन्यं न युक्तं प्रियसुहृदि गते मत्कृते चारिघोरात् व्यापतिं ज्ञातमस्य स्वतनुमहमिमां निष्क्रयं काल्पयानि।

दूसरे शब्दों में कहें तो जब पहले भी इस तरह के मामले में हत्यारे मारे जा चुके हैं तो यह समय नहीं है कि नीतिपरिणाम दिखाने में वक्र लगाये, ऐसे में वह क्या करेगी। लेकिन क्या मैं उदासीन रहूंगा? नहीं, यह उदासीनता के कारण नहीं है, मेरे प्रिय मित्र के साथ यह भयानक त्रासदी घटी है। मैंने समझाया कि मैं उसके शरीर की कीमत के रूप में अपना शरीर पेश करूंगा।

राक्षस को नायक स्वीकार करने की महत्ता का निर्णय-

प्रश्न यह उठता है कि विशाखदत्त द्वारा लिखित मुद्राराक्षसम नाटक का नायक कौन है? कई लोग दावा करते हैं कि चन्द्रगुप्त इस नाटक का नायक है। यद्यपि चंद्रगुप्त में अच्छेजन्म क्षेत्रियता और महानता जैसे वीर के गुण मौजूद

थे, लेकिन वीरता, स्वतंत्रता, सर्वशक्तिमानता आदि जैसे गुण उनमें मौजूद नहीं थे। नाटक के तीसरे और सातवें अंक में उनकी स्थिति। राजा होते हुए भी वह राज्य के प्रबंधन में पूरी तरह से चाणक्य पर निर्भर था। कहानी में उसकी स्थिति एक मंत्र दीपक की तरह है, दूसरी ओर चाणक्य की स्थिति केंद्र में सूर्य की तरह है कहानी की प्रगति और नायक के विभिन्न भागों में उसकी स्थिति, इन सभी निर्णयों को ध्यान में रखते हुए, चंद्रगुप्त को इस नाथ नाटक में नायक के रूप में नहीं माना जा सकता है।

वहीं कई लोग इस नाटक का नायक चाणक्य को भी मानते हैं। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने नाटक के नामक की विशेषताओं के बारे में कहा कि वह उदार, कुशल, महान बुद्धिमान, सुंदर, युवा, उत्साही, ऊर्जीवान, लोकान्मुख, उज्वल, बुद्धिमान और आच्छे चरित्र वाला व्यक्ति है। रूप और यौवन में नायक के अन्य गुण भी चाणक्य में पूर्णतः विद्यमान हैं। चाणक्य की पहचान मुद्राराक्षसम् नाटक के नायक के रूप में की जाती है। हालाँकि हर अंक में उसका स्थान नहीं है, फिर भी वह नाटक की गति और परिणाम में महत्वपूर्ण योगदान देता है। चाणक्य में धीरोदात्त नायक के सभी गुण मौजूद हैं। यानी हर बात को देखते हुए इस नाटक का नायक चाणक्य को ही माना जाता है।

महामती चाणक्य जैसा राधून है और इस नाटक के नायक के योग्य है। वह नंद वंश के मंत्री थे, उन्होंने इस नाटक में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राक्षस की हरकतों और उसका विरोध करने के लिए नाटक के हर भाग में अपनी उपस्थिति के कारण नाटकार ने चाणक्य और चन्द्रगुप्त का मंचन किया। और उनकी अनुपस्थिति के दृश्य उनके चारों ओर नाटक में बहल गए हैं। नाटक में नामक में जी गुण वांछनीय होते हैं वे सभी गुण उनमें विद्यमान थे। उनमें राजनीतिक चतुराई देखी जा सकती है। उदारता, विनम्रता, मित्रता आदि गुणों में वह बासानी से चाणक्य से आगे निकल गए। चाणक्य के चाबल में जब उसका चाबल खराब हो जाता है तो हमें उससे सहानुभूति होती है। हालाँकि पुरे नाटक में चाणक्य की उपस्थिति एक समान है लेकिन राक्षस को कई असफलताओं का सामना पर पड़ता है। निःस्वार्थता, निष्ठा, सहृदयता आदि गुणों में वह चाणक्य से भी ऊपर हैं।

किसी नाटक का भरतवाक्य आमतौर पर सुत्रधार या नायक द्वारा सुनाया जाता है। मुद्राराक्षसम् नाटक से भरतवाक्य राक्षस का पाठ करते हैं, इस दृष्टि से देखते हुए उन्हें नायक कहा जा सकता है। इसके अलावा यदि हम मुद्राराक्षसम् नाटक के नामकरण को देखें तो भी हम कह सकते हैं कि इस नाटक के नायक राक्षस के नाम पर रखा गया है। अंततः इस नाटक में राक्षस, चाणक्य के गुणों के समान है, परंतु वह बार-बार चाणक्य से पराजित हुआ और अपना मत स्थापित नहीं कर सका। अंत में वह चाणक्य की चाल में फस जाता है और चन्द्रगुप्त वय मंत्रालय स्वीकार करने के लिए मजबूर हो जाता है। कहा जाता है कि नामक वह हैं जो सब कुछ जीत सकता है, राक्षस की इस विफलता से के लिए सवाल यह है कि क्या उसे नाहक का नायक कहा जा सकता है। दूसरी ओर, इस नाटक में व चाणक्य की नामक माना जाता है क्योंकि वह राक्षस को हराकर अपने लक्ष्य तक पहुंच जाता है।

तथ्यसूत्र

- 1 विश्वनाथ रचित साहित्यदर्पण षष्ठ परिच्छेद श्लोक नं-6
- 2 भरत रचित-नाट्यशास्त्र षष्ठ अध्याय श्लोक नं-67
- 3 भरत रचित नाट्यशास्त्र 34 अध्याय श्लोक नं-18
- 4 धनञ्जय रचित दशरूपकम् द्वितीय प्रकाश श्लोक नं-3,4,5,1,2
- 5 भरत रचित नाट्यशास्त्र, 35 अध्याय श्लोक नं-7,8 page 222
- 6 विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षसम् द्वितीय अंक, श्लोक नं-6

- ⁷ विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षसम् द्वितीय अंक, श्लोक नं-7,8
- ⁸ विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षसम् षष्ठ अंक, श्लोक नं-19
- ⁹ विशाखदत्त रचित, मुद्राराक्षसम् द्वितीय अंक, श्लोक नं 13,14 Page-50,52
- ¹⁰ मुद्राराक्षसम् सप्तम अंक, श्लोक नं-7
- ¹¹ मुद्राराक्षसम् द्वितीय अंक, श्लोक नं - 19
- ¹² मुद्राराक्षसम् षष्ठ अंक, श्लोक नं-11
- ¹³ मुद्राराक्षसम् षष्ठ अंक, श्लोक नं-21

ग्रन्थसूची

1. साहित्यदर्पण सम्पादना-उ.उदय वन्दोपाध्याय संस्कृत बुक डिपो कोलकाता-700006
2. भरत नाट्यशास्त्र-1 सम्पादना-ड.सुरेशचन्द्र वन्दोपाध्याय वङ्गानुवाद-ड.सुरेशचन्द्र वन्दोपाध्याय ड.छन्दा चक्रवर्ती नवपत्र प्रकाशन कोलकाता-700073
3. भरत नाट्यशास्त्र - 4 सम्पादना- ड.सुरेशचन्द्र वन्दोपाध्याय वङ्गानुवाद-ड.सुरेशचन्द्र वन्दोपाध्याय ड.छन्दा चक्रवर्ती नवपत्र प्रकाशन कोलकाता-73
4. मुद्राराक्षसम् सम्पादना-श्रीसीतानाथ आचार्य श्री देवकुमार दास सदेश 101 वि.विवेकानन्द रोड, कोलकाता-700006
5. मुद्राराक्षसम् सम्पादना-श्री श्रीशचन्द्र चक्रवर्ती श्रीसत्यरञ्जन वन्दोपाध्याय सदेश 101 वि, विवेकानन्द रोड, कोलकाता-700006
6. दशरूपकम् सम्पादना-ड.सीतानाथ आचार्य संस्कृत पुस्तक भाण्डार ड.देवकुमार दास लिकाता-700006